अंक 40
नवम्बर 2025
मूल्य 200
ISSN : 2348 - 2672

लहक

साहित्य की वैचारिक पत्रिका

हमारे समय में हेतु भारद्वाज होने का अर्थ

- डॉ. कर्ण सिंह चौहान

लहक

RNI No.-WBHIN/2013/53192, Vol-12-13, Issue-136-147, Rs.200/- अंक 40

ISSN : 2348-2672 ■ मूल्य : 200 रु /

दिसम्बर-नवम्बर 2025

सौधात्री प्रकाशन

लहक

सम्पादक
निर्भय देवयांश

E-mail : lahakmonthly@gmail.com

पत्राचार पता : (केवल पत्राचार के लिए)
बी-3, बांदीपुर रोड, मिस्त्रीपाड़ा, बांसद्रोणी,
थाना - रिजेन्ट पार्क, कोलकाता - 700070

1. Name of the A/C :Saudhatri Prakashan
2. Name of the Bank :Indian Bank
3. Name of the Branch:Central Avenue, Kolkata - 700012
4. Address of the Bank:Indian Bank Central Avenue, Kolkata - 700012
5. MICR : 700019008
6. Type of Account : Saving
7. Account No. : 6056260007
8. IFC Code : IDIB000C004
Cheque should be in favour of 'Saudhatri Prakashan'

अंक : **136-147** (संयुक्तांक)

स्वागतम 2026

हेतु भारद्वाज विशेषांक

इस अंक में :

संपादकीय : डॉ. कर्ण सिंह चौहान
5. हमारे समय में हेतु भारद्वाज होने का अर्थ
21. हेतु भारद्वाज: जीवन परिचय
28. डॉ. हेतु भारद्वाज : एक खरा साहित्यकार : गोविंद माथुर
साक्षात्कार :
32. डॉ. हेतु भारद्वाज से डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल

Printer and Publisher :
Nirbhay Devyansh, on behalf of owner Saudhatri Prakashan,

Printed at : Satayug Employees Co - Operative Industrial Society Ltd, 13 Prafull Sarkar Street, Kolkata - 700072

Published at : B-3 Bandipur Road, MistryPara, Bansdroni, P.S.- Regent Park, Kolkata- 700070
Editor : Nirbhay Devyansh

© सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।
- प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- समस्त विवाद कलकत्ता न्यायालय के अन्तर्गत विचाराधीन होगा।

लहक

और डॉ. अजय अनुरागी की बातचीत:
''मुझे यह संतोष है जो कुछ मुझे मिलना चाहिए था उससे ज्यादा मिला''
51. हेतु जी अपने मूल्यांकन को लेकर इतने विरत क्यों हैं! : राजाराम भादू
61. विविधताओं का प्रतिबद्ध शिल्पी - हेतु भारद्वाज : उमाशंकर सिंह परमार
71. एक औघड़ मनीषी : श्याम जांगिड़
75. हेतु भारद्वाज की विशेषताएं : पुष्पा भागचन्दानी
78. एक उदार और अकुण्ठ रचनाकार: हेतु भारद्वाज: डॉ. रमेश मयंक
83. हेतु जी की सपाट बयानी : डॉ. चन्द्रपाल शर्मा
89. हेतु भारद्वाज: एक सृजनशील साहित्यिक बडेर: डॉ. नीरज दइया
92. मधुर कर्कश साहित्यकार हेतु भारद्वाज: हरिश्चंद्र मिश्र
98. लेखन में मनुष्यता का विस्तार: माधव हाड़ा
101. गुरुता और दृढ़ता का सेतु : डॉ. हेतु भारद्वाज : डॉ. अजय अनुरागी
104. डॉ. हेतु भारद्वाज : व्यक्तित्व के साक्षात प्रतिमान: रजनी मोरवाल
112. लघु पत्रिकाओं के लिए समर्पित जीवन : डॉ. नरेन्द्र इष्टवाल
118. 'संवाद-प्रति संवाद' के कुशल चितेरे - हेतु जी: मलय पानेरी
124. विचित्र किन्तु सत्य व्यक्तित्व का आत्मीय साथ: डॉ. उर्मिला साध
129. हेतु भारद्वाज-एक खाली चेक : कुलदीप शर्मा

सदस्यता शुल्क :
प्रति अंक 200 रुपये
आजीवन 10,000 रु.
संस्थाओं के लिए : वार्षिक 1600 रु., त्रैवार्षिक 4700 रु., पंचवार्षिक 6500 रु., आजीवन 12,000 रु.
विदेश के लिए : हवाई डाक प्रति अंक 6 डॉलर, **Saudhatri Prakashan** के नाम से भेजें।

विधि सलाहकार
शम्भुनाथ राय (कलकत्ता हाईकोर्ट)

दिल्ली ब्यूरो - राजू बोहरा
मो. : 09350824380
प्रजा दत्त डबराल
मो. : 09810974880
मुंबई ब्यूरो - अमरनाथ
मो. : 09833188133
लखनऊ ब्यूरो - सुरेश कुमार
मो. : 08009824098
पटना ब्यूरो - आलोक नंदन शर्मा
मो. :06305978747

लहक

131. जीवन जीने हेतु, जाने डॉ. हेतु जी से : डॉ. चन्द्र प्रकाश महर्षि

135. हेतु भारद्वाज की रचना-प्रक्रिया और कृतित्व का आलोचनात्मक विश्लेषण : डॉ. सुभाष चन्द्र

154. डॉ. हेतु भारद्वाज के विचार और सरोकार: डॉ. अजीत प्रियदर्शी

165. 'अक्सर' के जरिये एक वरिष्ठ लेखक की सामाजिक-सांस्कृतिक पीड़ा: महेंद्र नेह

167. हेतु भारद्वाज जी के लिए : शैलेय

हेतु भारद्वाज की कहानियाँ :

169. गाड़ी का इंतजार 173. मकान 177. लय भंग

हेतु भारद्वाज के लीला पद:

172. साधो! वार करो भरपूर

181. साधो! कलह-कथा हुई जारी।

183. साधो! भये कृषक बेचारे।

हेतु भारद्वाज के व्यंग्य :

182. दारू आपके द्वार 184. हर दुर्घटना को अवसर में बदलने की कला

हेतु भारद्वाज के संस्मरण:

186. भाषा की दरिद्रता का प्रदर्शन

188. किस-किस की इजाजत चाहिए लिखने से पहले?

हेतु भारद्वाज की कविताएँ

190. गाँव में सो जाऊँगा 191. औरत 192. जीवन-गणित 193. प्रेम 194. मर-मर कर जीना 195. जिंदगी 195. बच्चे 195. सपना

पत्र:

196. हेतु भारद्वाज को लिखे लेखकों के संदर्भित पत्र

तस्वीरें:

221. हेतु भारद्वाज के साथ परिजनों व रचनाकारों की तस्वीरें

हेतु भारद्वाज की रचनाओं की समीक्षाएँ :

223. मशाल जुलूस यथार्थ की अन्तर्दृष्टि: राजाराम भादू

227. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में मानव प्रतिमा का मूल्यांकन / संस्कृति संवाद : डॉ. वरुण कुमार तिवारी

241. विक्षोभ और मौन के विरल कथाकार इसराइल साहब : अरुण माहेश्वरी

255. जिन्हें देखा सुना दूर-दूर से : डॉ. श्रीभगवान सिंह

कविताएँ / ग़ज़ल :

265. सिद्धेश 266. सरला माहेश्वरी 272. राकेश भारतीय 276. डॉ. एम डी सिंह 279. निशान्त 280. रामचंद्र ओझा 282. रामावतार 'निश्छल' 286. अनन्त आलोक 289. डॉ. विनोद्र प्रकाश गुप्ता 'शलभ' 297. उर्मिला प्रसाद 347. डॉ. लखनलाल सिंह आरोही

कहानी:

298. कुर्ते की वापसी: देव वंश दुबे

303. रेखाचित्र: एक गंदा शहर:

लहक

मानेश्वर मनुज

308. डायरी लेखन: कविवर विजेंद्र
मेरे परम आदरणीय गुरु जी के साथ
का आत्मीयताभरा सहज संस्मरण:
कामेश्वर त्रिपाठी

316. स्मृति-शेष: शालिग्राम का कथा साहित्य :
धनेश दत्त पाण्डेय

समीक्षाएँ :

329. विनायक दामोदर सावरकर
नायक बनाम प्रतिनायक :
सूर्यनारायण रणसुभे

341. लौटा हुआ लिफाफा: जड़ों से
अनुप्राणित आत्मीयता का लोकधर्म:
उमाशंकर सिंह परमार

348. सच के पक्ष में खड़ी 'त्रिशुल' की
.गज़लें : गरिमा सक्सेना

353. अजातशत्रु : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद :
गौरव गौतम

356. आदिवासी कवि-कवयित्रियों की
कविताओं पर पुनीता जैन का
दस्तावेजी कार्य : अनिता रश्मि

359. डॉ. रामकृष्ण रचित पुस्तक 'दुराहे पर
खड़ा आदमी' पर विहंगम दृष्टि :
डॉ. राधानंद सिंह

361. 'संवेदना की आर्द्रता' पढ़ते हुए
कई बार मन भी आर्द्र हो उठता :
यश मालवीय

363. दिल और दिमाग से लिखी गईं
कविताएँ : अनन्त आलोक

... और अंत में :

368. हिंदी के संकीर्ण मस्तिष्क
और तंग दुनिया:
निर्भय देवयांश

लहक

संपादकीय

हमारे समय में हेतु भारद्वाज होने का अर्थ

- डॉ. कर्ण सिंह चौहान

हेतु भारद्वाज का जन्म उत्तर प्रदेश में बुलंदशहर जिले के गांव रामनेर में हुआ और उनकी प्रारंभिक शिक्षा भी वहीं हुई। जन्मभूमि भले ही बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश का गांव रामनेर रहा हो लेकिन उनकी कर्मभूमि राजस्थान रहा है जहां उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त की और नौकरी की। वे यहीं के वासी हैं। ऐसे भी कितने ही हिंदी के रचनाकार रहे हैं जिनकी जन्मभूमि तो राजस्थान रहा लेकिन कर्मभूमि देश के दूसरे स्थान रहे या विदेश। उसी प्रकार कितने ही ऐसे हैं जिन्होंने बाहर से आकर राजस्थान को अपनी कर्मभूमि बनाया। हेतु भारद्वाज उनमें से एक हैं।

हमारे यहां लोगों के देश-विदेश में प्रवासन और स्थानांतरण पर थोड़ा बहुत काम हुआ है और उसमें बहुत से आश्चर्यजनक तथ्य सामने आते हैं और कितने ही रहस्यमय राज खुलते हैं। कभी हिंदी के लेखकों के अप्रवासन और स्थानांतरण पर गंभीर शोध हो तो कितने ही नए-नए सुखद-दुखद प्रसंगों से हमारा अनुभव ज्ञान समृद्ध हो। प्राचीन काल से आज तक यह सिलसिला बराबर जारी है। इस अप्रवासन से समानताओं-असमानताओं का जो नृशास्त्र बनता है उससे लोगों के व्यक्तित्व और कृतित्व के बहुत से अनछुए पक्ष उद्घाटित हो सकते हैं। उत्तरप्रदेश से राजस्थान में बस गए मेरे परम मित्र विजेंद्र की भी याद इस संदर्भ में बहुत आती है।

यह प्रवासन कोई सामान्य घटना नहीं है बल्कि इसमें किसी भी व्यक्ति के व्यवहार विचार आदि के सूत्र जुड़े होते हैं। मसलन किसी साक्षात्कार में मैंने पढ़ा कि हेतु जी राजस्थानी को उतना महत्व नहीं देते जितना राजस्थान से मातृभाषा रूप में जुड़े लेखक देते हैं तो उसके पीछे कुछ हाथ इस प्रवासन का भी होगा। तार्किक तानाबाना तो है ही कि बोलियों का अतिरिक्त महत्व हिंदी की एक्य भावना के लिए खतरा है। मेरे मित्र अनुपम मिश्र जब दिल्ली से अलवर आकर रहे और यहां के परंपरागत जल संचय स्रोतों पर काम किया तो उसमें कितना राजस्थान में काम करने का बोध था और कितना होने का, यह फर्क हम जान सकते। दूसरे मित्र श्रीहर्ष जीवन भर बीकानेर से कलकत्ता जाकर रहे और वहां जीवनकर्म और रचना-कर्म किया तो उसमें कहां कितना बीकानेर और कितना कलकत्ता रहा इसे जानना शायद उन्हें पूरा समझने के लिए जरूरी हो।

यह साहित्य का उर्वर क्षेत्र है और यहां कोई मामूली भी सूत्र उपेक्षा करने के लिए नहीं है। बल्कि कहना चाहिए कि अंदर का अवचेतन जो रचनात्मक संसार है वह ऐसी कितनी चीजों से मिलकर